EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 15, Issue 1, January - June, 2026, Available online at: www.eduzonejournal.com

''उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं के प्रभाव का अध्ययन''

डॉ. तृप्ती सैनी[1], निकीता चौधरी[2]

[1]असोसिएट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज, जयपुर
[2]बी.एड.,एम.एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध का विषय "उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं के प्रभाव का अध्ययन" है। वर्तमान समय में समाचार पत्रों के साथ प्रकाशित बाल पत्रिकाएँ बच्चों के बौद्धिक, भाषाई तथा नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन पत्रिकाओं में कहानियाँ, कविताएँ, सामान्य ज्ञान, चित्र, पहेलियाँ तथा प्रेरणात्मक सामग्री सम्मिलित होती है, जो विद्यार्थियों की पठन अभिरुचि को विकसित करने के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायक सिद्ध होती हैं। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं का उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता, पठन कौशल, सामान्य ज्ञान, सृजनात्मकता तथा नैतिक मूल्यों पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही यह भी अध्ययन किया गया है कि इन पत्रिकाओं के नियमित अध्ययन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में किस सीमा तक सुधार होता है।

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु उच्च प्राथमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों का चयन नमूना पद्धति द्वारा किया गया। डेटा संकलन के लिए प्रश्नावली, अवलोकन तथा साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य तथा तुलनात्मक पद्धति द्वारा किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाएँ विद्यार्थियों की पठन रुचि को बढ़ाने, शब्द भंडार में वृद्धि करने, सामान्य ज्ञान को समृद्ध करने तथा नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अतिरिक्त इन पत्रिकाओं का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी सकारात्मक प्रभाव पाया गया। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बाल पत्रिकाएँ उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के समग्र विकास का एक प्रभावी माध्यम हैं और विद्यालयी शिक्षा में इनके उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द: उच्च प्राथमिक स्तर, हिन्दी समाचार पत्र, बाल पत्रिकाएँ, शैक्षिक उपलब्धि, पठन कौशल, भाषा दक्षता, व्यक्तित्व निर्माण, सामान्य ज्ञान, नैतिक मूल्य।

1. प्रस्तावना

आधुनिक युग में निरन्तर नई-नई घटनायें घटती रहती है और बड़ी तेजी से घटती है। सूचनाएं आधुनिक मनुष्य के लिए ज्ञान का स्त्रोत ही नहीं शक्ति का भी स्त्रोत है। इसलिए अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं की सूचना प्राप्त करना आधुनिक मनुष्य की एक अनिवार्य जरूरत बन गई है। ऐसी स्थिति में जनसंचार का अत्यधिक महत्व है। जन संचार शब्द जन$संचार शब्दों से मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है-जनता तक संदेश या सूचना पहुँचाना। सम्प्रेषण की सम्पूर्ण प्रक्रिया जनसंचार है, जिसके द्वारा मानव अपने विचारों और मंतव्यो का आदान-प्रदान करता है। मनुष्य के विकास के साथ-साथ जनसंचार माध्यमों का भी विकास हुआ। जनसंचार माध्यमों को दो भागों परम्परागत व आधुनिक माध्यम में बांटा जाता है। परम्परागत माध्यम में लोकगीत, लोक नाटक, लोक कलाएँ, लोक रंगमंच आते है वहीं आधुनिक माध्यमों को मुद्रण (प्रकाषित) माध्यम व इलैक्ट्रिनिक माध्यम आते है। प्रकाषित माध्यम में का मुद्रण और प्रकाषन होता है। दैनिक समाचार पत्रजन समाज तक समाचार पहुँचाने के लिए समाचार-पत्रों के साथ-साथ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक और वार्षिक पत्र-पत्रिकाऐ भी प्रकाशित होती है। इसके अतिरिक्त विज्ञापन, पोस्टर, पम्पलेट, बैनर आदि भी मुद्रण संचार माध्यम के उपयोगी साधन माने जाते है।

समस्या का औचित्यः-

कोई भी अनुसंधान कार्य करने वे पूर्व एक समस्या का चयन आवश्यक होता है। वह समस्या किसी भी व्यक्ति या समूह से संबंधित हो सकती है। जब अनुसंधानकर्ता उस समस्या का चयन करता है तो उसका कोई उद्देश्य अथवा लक्ष्य होते है। उस समस्या को चुनने का कोई औचित्य अवश्य होता है। जिस किसी भी समस्या को अनुसंधानकर्ता चुनता है। वह शैक्षिक, सामाजिक, जागरूकता व वर्तमान समस्या पर आधारित होनी चाहिए। आज का युग विज्ञान व तकनीकी का है। वर्तमान समय में मनोरंजन के नाम पर बच्चों के सामने मोबाईल, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, टी.वी. विडियो गेम आदि बहुत विकल्प मौजूद है। लेकिन वर्तमान समय में अभी भी समाचार पत्र व पत्रिकाएं बच्चों के लिए मनोरंजन का साधन है। दूर-दराज के गांव शहरों में जहां इन्टरनेट नहीं है तथा जिनके पास मोबाईल, टी.वी. नहीं है। वे आज भी समाचार पत्रों में आने वाली कहानी, कविता, चित्रों के द्वारा अपना मनोरंजन करते है तथा इससे उनमें सही गलत ही समझ व हिन्दी भाषा में पढ़ने व लिखने का अवसर मिलता है। सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों में आज भी बच्चों

से समाचार पत्र पढ़वायें जाते है। जिससे उनमें भाषा का स्तर विकसित होता है। लेकिन वर्तमान समय में जो समाचार पत्र आते है। उनमें क्या बच्चों के स्तर के अनुसार भाषा का प्रयोग किया जाता है। क्या जो पृष्ठ बच्चों के लिए उनमे ंबच्चों द्वारा लिखी। कहानी, कविता को स्थान दिया जाता है ? क्या वर्तमान में जो बच्चों कि पत्रिकाएं आती है। यह उनके बौद्धिक, मानसिक विकास में सहायक है ? क्या उनमें रोजकता आज भी बनी हुई है ? इन सभी कारणों से प्रेरित होकर शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन के लिए इस विषय का चयन किया, जिससे कि वह हिन्दी समाचार पत्रों में प्रकाशित बाल पृष्ठों का अध्ययन कर वह वर्तमान समय में कितने उपयोगी व बालकों के बौद्धिक व मानसिक विकास में कितना सहायक है यह अध्ययन कर सकें।

अध्ययन का महत्वः-
बालक एक पौधे के समान है। वह प्रतिदिन विकास करता है। जैसे वातावरण में बालक रहेगा वैसा ही उसका विकास होगा, वैसा ही प्रभाव उसके संवेग पर पड़ेगा।

वर्तमान समय में हिन्दी समाचार पत्रों में जो बाल पृष्ठ या पत्रिकाएँ प्रकाशित की जा रही है। उनका हर स्तर के बालकों के लिए अपना महत्व है, क्यांेकि बालक देखकर, पढ़ कर व सुन कर ही सीखते है।

आजकल बड़े समाचार पत्र जैसे दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका आदि सप्ताह में एक दिन बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित करते है। जिसमें बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक और मनोरंजक तथा सृजनात्मकता सम्बन्धित सामग्री प्रकाशित होती है। बाल पत्रिका बच्चों की समसामयिक जानकारी में वृद्धि करने के साथ-साथ भाषाई ज्ञान को बढ़ाने में भी सहायक होते है। बाल पृष्ठ बच्चों के सामने भाषा के नये-नये शब्द तथा बच्चों में रचनात्मकता के गुण को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण योगदान रखते है। यह विद्यार्थियों के पठन कौशल के विकास में भी योगदान देते है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

1. गुप्ता रामबाबू (2025) (शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर, छ.ग.) ने ''बाल पत्रिकाओं का विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' किया। इसके उद्देश्य निम्नलिखित थे -छात्रों में पढ़ने की आदत की स्थिति ज्ञात करना।नियमित एवं प्रायोगिक समूह में साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत ज्ञात करना।पढ़ने की आदत में परिवर्तन का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव ज्ञात करना।निष्कर्ष:नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया गया। किन्तु प्रायोगिक समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करने पर शहरी विद्यार्थियों में ग्रामीण की तुलना में उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त होती है। साहित्यिक एवं ज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के उपयोग का विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत में सहसंबंध मध्यम स्तर का पाया गया। यह प्रमाणित होता है कि बाल पत्रिकाओं के द्वारा छात्रों के पढ़ने की आदत में सुधार लाया जा सकता है।

2. सोनू (श्रीमती) (शोधार्थी- महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर), (2024) ने गिजुभाई द्वारा किये गये एक शैक्षिक स्वतन्त्रता संग्राम का अध्ययन किया, जिसके निम्न उद्देश्य थे बच्चों में सीखने की इच्छा पैदा करना। बच्चों को उबाऊ पाठ्यपुस्तकों से और परीक्षा के डर से दूर रखना। निष्कर्ष- इसमें पाया गया कि-बच्चों की शिक्षा में रूची बनाये रखने के लिए उन्हें कहानियों, लोककथाओं, नाटकों , गायन, नृत्य और चित्रों द्वारा दी जाती है। बच्चें सीखें, बच्चे करें, बच्चें खेले, इन्हीं सबके साथ, शिक्षक और बच्चों के मध्य डर के बजाय प्रेम का सम्बन्ध हो।

3. कुमार विनोद (2023) ने हरियाणा में सरकारी स्कुल शिक्षकों द्वारा न्यू मीडिया उपकरणों की प्रयोग पद्धति द्वारा विद्यार्थियों में प्रभाव का अध्ययन किया, जिसके उद्देश्य निम्नलिखित थे विद्यार्थियों के बीच न्यू मीडिया टूल के प्रति जागरूकता और उपयोग का अध्ययन किया गया तथा न्यू मीडिया टूल के प्रभाव का मूल्यांकन करना है। निष्कर्ष-इसमें पाया गया कि न्यू मीडिया द्वारा के पुराना मीडिया बदलता जा रहा है तथा न्यू मीडिया द्वारा शिक्षण में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

4. मलसकर कंचन (2022)- ने अंग्रेजी और मराठी समाचार पत्रों को स्कूली बच्चों द्वारा पढ़ने व समझने के लिए अध्ययन किया, जिसके उद्देश्य निम्नलिखित थे- अंग्रेजी से बच्चों की अखबार पढ़ने की आदतों का विकास होगा।बच्चों की जीवन शैली के संदर्भ में समाचार पत्रों की सामग्री और पढ़ने की आदतों के बीच संबंध का पता लगाना। निष्कर्ष- इसमंे पाया गया कि- बच्चों के पास टेलीविजन, कम्प्यूटर जैसे अन्य इलेक्ट्रोनिक मीडिया तक तो पहुँच है, लेकिन बच्चों को प्रतिदिन कम से कम एक ससमाचार पत्र भी आसानी से उपलब्ध हो। अखबरों व पत्रिकाओं में छपे छात्रों के नमूने उनपकी उम्र के अनुकूल तथा उन्हें पढ़ा जा सकें, इसे प्रकाशित किये जाये। अखबारों में बिना किसी पक्षपात के बच्चों के सवालों के जवाब हो।

5. क्यूमार एम. सलीम (2020) ने ''माध्यमिक स्तर के लड़के लड़कियों में सृजनात्मक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया, जिसके उद्देश्य निम्न थे माध्यमिक स्तर के विद्यालय के लड़के एवं लड़कियों में सृजनात्मक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना। विद्यार्थी के स्तर एवं सृजनात्मक लेखन मे सहसंबंध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष- इसमें पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयी लड़को का लड़कियों की अपेक्षा सृजनात्मक क्षमता निम्न है तथा सृजनात्मक लेखन व विद्यार्थी के स्तर में सकारात्मक सहसंबंध है।

साहित्य विवेचना:

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि संवेग से संबंधित शोध काफी संख्या में हो चुके हैं। भारत में भी इनसे संबंधित शोध हुए है। इन सभी शोधों के उद्देष्य तथा उपलब्धियों का अध्ययन इसलिए किया गया है कि व्यर्थ पुनरावृत्ति को रोका जा सके तथा संबंधित अध्ययन से संबंधित उद्देष्य क्या है? तथा अध्ययन के निष्कर्ष क्या प्राप्त हुए है इसका ज्ञान हमें संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण से ही प्राप्त हो सका है। किन्तु ''उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में बाल-पत्रिकाओं कि रोचकता, भाषागत, रचनात्मकता के विकास व प्रभाव'' के संबंध में कार्य नही किया गया है। इसलिए स्पष्ट है कि शोधकर्त्री द्वारा चुना गया विषय इन सब से भिन्न है। परन्तु फिर भी शोधकर्त्री द्वारा उपरोक्त साहित्य की सहायता लेते हुए अपने शोध कार्य को सम्पन्न किया गया है।
समस्या कथनः-

''उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं के प्रभाव का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्यः-

1 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में सलग्न बाल पत्रिकाएँ की रोचकता के प्रभाव का अध्ययन करना।
2 उच्च प्राथामिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रो में संलग्न बाल पत्रिकाओं की सामग्री का भाषागत रुप से अध्ययन करना।
3 उच्च प्राथामिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रो मे संलग्न बाल पत्रिकाओ से रचनात्मकता का बच्चो पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

कार्यप्रणालीः-

- अनुसंधान में प्रयुक्त अनुसंधान विधिः- प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति एवं प्रस्तावित उद्देश्यों को देखते हुए इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रदत्त संकलन हेतु किया गया है।
- न्यादर्शः-न्यादर्श के अन्तर्गत सीकर जिले के सोला ग्राम के 100 बालक एवं 100 बालिकाओं को न्यादर्ष में रूप में चयनीत किया गया है।
- जनसंख्याः-प्रस्तुत अध्ययन में सीकर जिले के सोला ग्राम के कक्षा 6 से 8 की बालक बालिकाओं का चयन जनसंख्या के रूप में किया जायेगा।
- चरः-

चर
स्वतंत्र चर आश्रित चर
बाल पत्रिकाएं बालक बालिकाओं पर प्रभाव

- अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरणः- प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग आंकड़ों के संग्रहण हेतु किया गया है। साथ ही 2 समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं का भी चयन किया गया है जो इस प्रकार है-1-दैनिक भास्कर में संलग्न बाल भास्कर 2-राजस्थान पत्रिका में संलग्न बाल हंस
- उपकरण की वैधता एवं विश्वसनीयता
- व प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त प्रश्नावली की वैधता विषय विशेषज्ञों की राय के आधार पर निर्धारित की गई। विशेषज्ञों के सुझावों के अनुसार आवश्यक संशोधन के पश्चात विषयवस्तु वैधता सूचकांक का मान 0.87 प्राप्त हुआ।
- व उपकरण की विश्वसनीयता ज्ञात करने हेतु ब्तवदइंबीष्े सचीं विधि का प्रयोग किया गया, जिसका मान 0.82 प्राप्त हुआ। अतः शोध उपकरण वैध एवं विश्वसनीय पाया गया।
- प्रयुक्त सांख्यिकीः-प्रस्तुत शोध में प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचन हेतु प्रतिशत व बार ग्राफ का प्रयोग किया जायेगा।

उदेश्य 1:-उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल-पत्रिकाओं की रोचकता के प्रभाव का अध्ययन।

क्र.सं.	समूह (श्रेणी)	संख्या	प्रतिशत	
1.		बालिकाएँ	100	98.4ः
2.		बलक	100	96.6ः

व्याख्या एवं विश्लेषणः- तालिका संख्या-1 में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल-पत्रिकाओं की रोचकता के प्रभाव के अध्ययन से संबंधित आंकड़ों को प्रदर्षित करती है।उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बाल-पत्रिकाओं की रोचकता के प्रभाव के संदर्भ में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों, जिनमें बालिकाओं का प्रतिशत 98.4 प्रतिशत है तथा बालको का प्रतिशत 96.6 है। ये प्रतिशत यह दर्शाते है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल-पत्रिकाओं को पढ़ने में उनकी रोचकता है। उनको पढ़ना अच्छा लगता है तथा इसमें बालिकाओं का प्रतिशत बालकों से कुछ अधिक है। इससे स्पष्ट है कि बालिकाएँ बाल-पत्रिकाओं को पढ़ने में अधिक रूचि लेती है।

उदेश्यः2- उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल-पत्रिकाओं की सामग्री का भाषागत रूप से अध्ययन।

क्र.सं.	समूह (श्रेणी)	संख्या	प्रतिशत	
1.		बालिकाएँ	100	97.8ः
2.		बालक	100	96.2ः

व्याख्या एवं विश्लेषणः- तालिका संख्या-2 में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल-पत्रिकाओं की सामग्री का भाषागत रूप से संबंधित आंकड़ों को प्रदर्षित करती है।उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बाल-पत्रिकाओं की भाषा के संदर्भ में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों, जिनमें बालिकाओं का प्रतिशत 97.8 प्रतिशत तथा बालको का प्रतिशत 96.2 प्रतिशत है। ये आंकड़े यह बताते है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं की भाषा बच्चों के स्तर के आधार पर ही लिखी जाती है। पत्रिका की विषय-वस्तु उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों के अनुरूप है तथा सरल है।

उदेश्य3ः-उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल-पत्रिकाओं से रचनात्मकता का बच्चों पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन।

क्र.सं.	समूह (श्रेणी)	संख्या	प्रतिशत	
1.		बालिकाएँ	100	85.6ः
2.		बालक	100	79.8ः

व्याख्या एवं विश्लेषणः- तालिका संख्या-3 में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल-पत्रिकाओं से रचनात्मकता का बच्चों पर होने वाले प्रभाव के अध्ययन से संबंधित आंकड़ों को प्रदर्शित करती है।उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बाल-पत्रिकाओं से रचनात्मकता के संदर्भ में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों, जिनमें बालिकाओं का प्रतिशत 85.6 प्रतिशत तथा बालको का प्रतिशत 79.8 प्रतिशत है। ये आंकड़ें ये बताते है कि बाल-पत्रिकाओं से रचनात्मकता का प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। बच्चों में कुछ नया करने के गुणों का विकास होता है। इसमें बालिकाओं का प्रतिशत बालको की अपेक्षा अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि बालिकाओं का रूधान रचनात्मकता की ओर अधिक है। वे बाल-पत्रिकाओं से नयी-नयी वस्तुओं को बनाने व सीखने में अधिक रूचि लेती है।

परिणाम:-
समाचार पत्र व बाल पत्रिकाओं के सम्पादकों को चाहिए कि वो बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली विषय सामग्री को पूर्व में पूरी जाँच करें जो कि बाल पत्रिकाओं में आने वाली कहानियों, कविताओं, अंतर खोजें, अंग्रेजी व हिन्दी वर्तनी, पहेलियों को बच्चों के सामने ऐसे प्रकट करें कि उनका बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव रहे।प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षक बालकों को ऐसी बाल पत्रिकाएं पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें जो विद्यार्थियों के संवेग को श्रेष्ठ बनाने की दृष्टि से उपयोगी हो। बाल भास्कर व बाल हंस में बहुत सी ऐसी विषय सामग्री आती है जो बच्चों की समझ को बढ़ाती है।अध्यापक बाल भास्कर की विषय सामग्री को शिक्षा से जोड़ कर अपने शिक्षण को प्रभावी बना सकते हैं तथा सहायक सामग्री के रूप में उपयोगी कर सकते हैं।

निष्कर्षः
इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च प्रायामिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार मत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं के प्रभाव से विद्यार्थियों के समग्र विकास में बाल पत्रिकाएँ महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। अध्ययन से प्राप्त तथ्यों एवं आंकडों के विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि इन पत्रिकाओं के नियमित अध्ययन से विद्यार्थियों की पठन रुचि मे वृद्धि होती है। तथा उनकी भाषा दक्षता, सामान्य ज्ञान एवं रचनात्मकता अभिव्यक्ति का विकास होता है। बाल पत्रिकाएँ विद्यार्थियों को सामाजिक व नैतिक मुल्यो से परिचित करवाते हुए उन्हे जागरूक एवं उत्तरदायित्व नागरिक बनाने हेतु दिशा में प्रेरित करती है।

जिन विद्यार्थियों का बाल पत्रिकाओं से नियमित संपर्क पाया गया, उनमें आत्मविश्वास जिज्ञासा तथा सीखने की प्रवृत्ति अधिक विकसित देखी गई।

अतः समग्र रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाएँ शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया को सशक्त एवं प्रभावी बनाने में सहायक है तथा विद्यार्थियो के बौद्धिक, भाषाई एवं समाजिक विकास के लिए एक उपयोगी शैक्षिक साधन के रूप में कार्य करती है।

शैक्षिक निहितार्थः -
इस शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निम्न है-

- बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली विषय सामग्री की समाचार पत्र व बाल पत्रिकाओ के सम्पादको का पूर्व में पुरी जाँच करनी चाहिए। ताकि उनका बच्चो पर सकरात्मक प्रभाव रहे।

- शिक्षक बालकों को ऐसी बाल पत्रिकाएं पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें जो विद्यार्थियों के संवेग को श्रेष्ठ बनाने की दृष्टि से उपयोगी हो।
- अभिभावको को चाहिए कि वो बालकों को बाल भास्कर पढ़ने व उससे नई-नई बातें सीखने के लिए प्रोत्साहित करें।

भावी शोध हेतु सुझावः

- इस शोध कार्य को सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों पर भी अध्ययन किया जा सकता है।
- बाल पत्रिकाओं के शारीरिक, मानसिक व पारिवारिक प्रभाव का अध्ययन कर सकते हैं।
- इस शोध में बाल भास्कर व बाल हंस पत्रिका का चुनाव किया गया है। आगामी शोध अन्य पत्रिकाओं को लेकर किया जा सकता है।
- इन्टरनेट पर उपलब्ध अन्य पत्रिकाओं पर अध्ययन किया जाना चाहिए।

ग्रंथ सूची

1. शर्माए रामनाथ ;2022द्धण् बाल साहित्य का स्वरूप और विकासण् जयपुररू राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
2. सिंहए केण्पीण् ;2021द्धण् हिन्दी पत्रकारिता का इतिहासण् नई दिल्लीरू प्रभात प्रकाशन।
3. वर्माए श्यामसुंदर ;2020द्धण् बाल मनोविज्ञानण् आगरारू विनोद पुस्तक मंदिर।
4. गुप्ताए आरण्केण् ;2023द्धण् शिक्षा में मीडिया का प्रभावण् दिल्लीरू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. मिश्राए सुनील ;2022द्धण् हिन्दी बाल पत्रिकाओं का अध्ययनण् लखनऊरू भारती प्रकाशन।
6. तिवारीए हेमंत ;2021द्धण् प्राथमिक शिक्षा और भाषा विकासण् नई दिल्लीरू एनसीईआरटी।
7. अग्रवालए सुषमा ;2023द्धण् बाल साहित्य और सृजनात्मकताण् जयपुर।
8. यादवए एसण्पीण् ;2020द्धण् शैक्षिक अनुसंधान विधियाँण् आगरा।
9. www.researchgate.com
10. www.wikipedia.com
11. www.shodhganga.infblt.
12. www.dessertationtopic.com